

प्रेपकः

आहोत्त कुगार ठीन  
राज्यिक  
उत्तराचल शासन

रोपा ०१

समस्त प्रमुख सचिव/सचिव/अपर सचिव  
उत्तराचल शासन

कार्मिक अनुभाग-2देहरादून: दिनांक ०५ जनवरी, २००३

**प्रियगः** अनुशासनिक कार्यवाही में दण्ड देने से पूर्व जाँच रिपोर्ट की प्रति आपदारी अधिकारी/कर्मचारी को उपलब्ध कराना।

प्रारंभिक

उपग्रहित गिरय पर मुझे यह कहने का निवेश हुआ है कि शासन रूप से अन्य प्रति गोहमाद रमजान खों (सिविल अपील संख्या 571 ऑफ 1985 ए.आई.आर. 1995, सुप्रीम कोर्ट पृष्ठ संख्या 471) में मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय दि ० 20.11.90 द्वारा यह रिहाइन्ट प्रतिपादित किया गया है कि यदि नियुक्ति प्राधिकारी से इतर किसी अधिकारी के माध्यम से जाँच कराई जाय तो जाँच अधिकारी की आख्या उसकी संस्तुतियों सहित आरोपित सरकारी सेवक को सूचनार्थ उपलब्ध कराई जाय, ताकि आरोपित सरकारी सेवक नियुक्ति प्राधिकारी/दण्डन प्राधिकारी के समक्ष निष्कर्षों के विरुद्ध यदि चाहे तो प्रत्यावेदन प्रस्तुत कर सके।

2— मा. सर्वोच्च न्यायालय के उक्त निर्णय के परिप्रेक्ष्य में पूर्ववर्ती राज्य उत्तर प्रदेश द्वारा आदेश निर्गत किये गये थे। इसी परिप्रेक्ष्य में शासन द्वारा विचारोपरान्त यह निर्णय लिया गया है कि अनुशासनिक कार्यवाही के ऐसे मामलों में जहाँ दण्ड दिये जाने वा प्रत्यावेदन द्वारा अपील रूल्स पर जारी अन्य विद्यमान शासनादेशों के अतिरिक्त निम्न प्रक्रिया का भी अनुपालन सुनिश्चित किया जाये:-

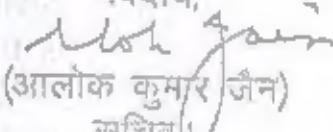
- (1) अनुशासनिक कार्यवाही के मामले में, जाँच यदि नियुक्ति प्राधिकारी से भिन्न किसी प्राधिकारी द्वारा कराई जाय तो इस प्रकार की जाँच के आधार पर निर्णय लेने से पूर्व जाँच अधिकारी की आख्या (उसकी संस्तुतियों सहित) आरोपित सरकारी सेवक को सूचनार्थ उपलब्ध कराई जाय।
- (2) जाँच आख्या और दण्ड की संस्तुति अधिकारी सेवक को पंजीकृत डाक द्वारा भेजने के कम से कम 14 दिवस तक प्रत्यावेदन प्रतीक्षा के उपरान्त दण्ड के प्रत्यावेदन पर विचार किया जाय और यदि कोई प्रत्यावेदन प्राप्त हो जाय तो पहले प्रत्यावेदन पर विचार करके निर्णय लिया जाय तथा दण्डादेश में प्रत्यावेदन पर विचार करके निर्णय लेने का उल्लेख किया जाय।
- (3) सतर्कता विभाग द्वारा सम्पादित जाँच प्रारम्भिक जाँच की श्रेणी में आती है तथा गोपनीय रद्दमान की होती है। अत्येक्तर उन्हें विभागीय कार्यवाही में साध्य रद्दमान उद्धृत भी नहीं किया जाता। अतः सतर्कता विभाग द्वारा

सम्पादित जॉच रिपोर्ट की प्रति अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध करने का प्रश्न नहीं उठता।

- (4) प्रशासनाधिकरण की जॉच "विनागीय कार्यवाही" की श्रेणी में आती है, अतः उनके आधार पर वृहद् दण्ड देने के पूर्व उसकी प्रति अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध कराया जाना आवश्यक होगा।
- (5) जॉच आख्या की प्रति उपलब्ध कराते हुए, अपचारी कर्मचारी से जो प्रत्यावेदन/स्पष्टीकरण प्राप्त किया जाता है, वह संविधान के अनुच्छेद 311 (2) के अन्तर्गत नैसर्गिक व्याय के कम में सुनवाई का पर्याप्त अवसर देने की परिवर्ती में आता है। अतएव जॉच अधिकारी की आख्या प्राप्त होने पर, नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा, अपना कोई मन्त्रव्य निर्धारित किये बिना ही, उसे दण्ड की संस्तुतियों, यदि जॉच अधिकारी द्वारा की गई हों, सहित अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध कराई जाय तथा उसके द्वारा निर्धारित समय में प्रस्तुत प्रत्यावेदन पर विचारोपरान्त ही दण्ड के विषय में मत स्थिर कर विहित प्रक्रिया के अनुराग सौक रोपा आयोग से परामर्श प्राप्त किया जाय।
- (6) सी.एस.आर. के अनुच्छेद 351ए के तहत दण्ड प्रस्तावित होने की दशा में भी, अन्तिम निर्णय लेने के पूर्व जॉच अधिकारी की आख्या अपचारी सरकारी सेवक को उपलब्ध कराई जाय।

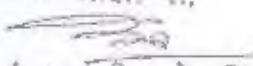
3- जांच अधिकारी की जांच आख्या में अपचारी कर्मचारी को दोष सिद्ध न पाया गया हो, परन्तु उपलब्ध राख्यों/राशियों के दबानी से नियुक्ति प्राधिकारी का समाधान हो जाए कि कोई आरोप अपचारी कर्मचारी पर लिया होता है, तब नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा अपचारी कर्मचारी को उस आरोप/आरोपों के सिद्ध होने के सम्बन्ध में सकारण निर्धार्य उपरोक्तानुसार प्रत्यावेदन प्रस्तुत करने के लिए दिया जाये, और उपरोक्तानुसार ग्रात्यावेदन के लिए रामय दिया जाये। प्रत्यावेदन प्राप्त होने पर विधार करके निर्णय लिया जाये।

4- अनुरोध है कि कृपया उपरोक्त आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने का काल करें।

भवदीय,  
  
(आलोक कुमार जैन)  
संघिव

संख्या-1596(1)/कार्मिक-2/2002, तददिनांक।

- प्रतिलिपि निम्नलिखित लोगों सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु भेजिता—
- 1- रामरत गुणलालयक्त, उत्तरांचल।
  - 2- रामरत गिरागार्थ्यक्त/कायालयार्थ्यक्त, उत्तरांचल।
  - 3- संघिव, श्री राज्यपाल, उत्तरांचल।
  - 4- संघिव, प्रधान सभा, उत्तरांचल।
  - 5- संघिव, लोक सेवा आयोग, उत्तरांचल।
  - 6- निवन्धक, उच्च न्यायालय, नैनीताल।
  - 7- संघिवालय के समस्त अनुभाय।

आज्ञा से,  
  
(आर. सी. लोहनी)  
उप संघिव।